SYLLABUS

Class – B.A. (HONS.) MASS COMMUNICATION

I Year (Paper 02)

Subject – हिन्दी

इकाई–1	प्रयोजनमूलक हिन्दी का अभिप्राय एवं विशेषताएँ, प्रयोजनमूलक हिन्दी के विभिन्न रूप।
इकाई–2	हिन्दी और उसकी पारिभाषिक शब्दावली।
इकाई–3	प्रशासनिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, कला और सूचना प्रौद्योगिकी में प्रयोजनमूलक हिन्दी
इकाई–4	हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, कालखंड, प्रमुख पुस्तकें और लेखक, प्रमुख सम्मान-पुरस्कार।
इकाई–5	हिन्दी के विकास में योगदान देने वाली प्रमुख संस्थाएँ। साहित्य एवं जनमाध्यमों की भाषा।

renaissance renaissance renaissance

bdkbZ & 1

ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh

प्रयोजनमूलक हिन्दी के संदर्भ में 'प्रयोजन' शब्द के साथ 'मूलक' उपसर्ग लगने से प्रयोजनमूलक पद बना है। प्रयोजन से तात्पर्य है उद्देश्य अथवा प्रयुक्ति। 'मूलक' से तात्पर्य है आधारित। अतः प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य हुआ किसी विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा। इस तरह प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य हिन्दी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप या शैली है जो विषयगत तथा संदर्भगत प्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक संरचना द्वारा प्रयुक्त की जाती है। विकास के प्रारम्भिक चरण में भाषा सामाजिक सम्पर्क का कार्य करती है। भाषा के इस रूप को संपर्क भाषा कहते हैं। संपर्क भाषा बहते नीर के समान है। प्रौढा की अवस्था में भाषा के वैचारिक संदर्भ परिपुष्ट होते हैं और भावात्मक अभिव्यक्ति कलात्मक हो जाती है। भाषा के इन रूपों को दो नामों से अभिहित किया जाता है। प्रयोजनमूलक और आनन्दमूलक। आनन्द विधायक भाषा साहित्यिक भाषा है। साहित्येतर मानक भाषा को ही प्रयोजनमूलक भाषा कहते हैं , जो विशेष भाषा समुदाय के समस्त जीवन-संदर्भो को निश्चित शब्दों और वाक्य संरचना के द्वारा अभिव्यक्त करने में सक्षम हो। भाषिक उपादेयता एवं विशिष्टिता का प्रतिपादन प्रयोजनमूलक भाषा से होता है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप :

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। इसके बोलने व समझने वालों की संख्या के अनुसार विश्व में यह तीसरे क्रम की भाषा है। यानी कि हिन्दी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। अतः स्वाभाविक ही है कि विश्व की चुनिंदा भाषाओं में से एक महत्वपूर्ण भाषा और भारत की अभिज्ञात राष्ट्रभाषा होने के कारण , देश के प्रशासनिक कार्यो में हिन्दी का व्यापक प्रयोग हो , राष्ट्रीयता की दृष्टि से ये आसार उपकारक ही है।

राजभाषा के अतिरिक्त अन्य नये-नये व्यवहार क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार तथा प्रसार होता है, जैसे रेलवे प्लेटफार्म, मंदिर, धार्मिक संस्थानों आदि में। जीवन के कई प्रतिष्ठित क्षेत्रों में भी अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। विज्ञान और तकनीकी

renaissance

शिक्षा, कानून और न्यायालय , उच्चस्तरीय वाणिज्य और व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में हिन्दी का व्यापक प्रयोग होता है। व्यापारियों और व्यावसायियो के लिए भी हिन्दी का प्रयोग सुविधाजनक और आवश्यक बन गया है। भारतीय व्यापारी आज हिन्दी की उपेक्षा नहीं कर सकते, उनके कर्मचारी, ग्राहक सभी हिन्दी बोलते हैं। व्यवहार के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग प्रयोजनों से हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। बैंक मे हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है तो सरकारी कार्यालयो में हिन्दी के प्रयोग का प्रयोजन अलग है। हिन्दी के इस स्वरूप को ही प्रयोजनमूलक हिन्दी कहते हैं।

इस प्रकार विभिन्न प्रयोजनों के लिए गठित समाज खंडों द्वारा किसी भाषा के ये विभिन्न रूप या परिवर्तन ही उस भाषा के प्रयोजनमूलक रूप हैं। अंग्रेजी शासन में यूरोपीय संपर्क से हमारा सामाजिक , आर्थिक और प्रशासनिक ढांचा काफी बदला , धीरे-धीरे हमारे जीवन में नई उद्भावनाएं (जैसे पत्रकारिता, इंजीनियरिंग) पनपी और तदनुकूल हिन्दी के नए प्रयोजनमूलक भाषिक रूप भी उभरे। स्वतंत्रता के बाद तो हिन्दी भाषा का प्रयोग क्षेत्र बहुत बढ़ा है और तदनुरूप उसके प्रयोजनमूलक रूप भी बढे हैं और बढ़ते जा रहे हैं। साहित्यिक विधाओं , संगीत, कपड़ा-बाजार, सट्टाबाजारों, चिकित्सा, व्यवसाय, खेतों, खलिहानों, विभिन्न शिल्पों और कलाओं , कला व खेलों के अखाड़ों , कोर्टो कचहरियों आदि में प्रयुक्त हिन्दी पूर्णत: एक नहीं है। रूप-रचना , वाक्य रचना, मुहावरों आदि की दृष्टि से उनमें कभी थोड़ा कभी अधिक अंतर स्पष्ट है और ये सभी हिन्दी के प्रयोजनमूलक परिवर्त या उपरूप है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की विशेषताएं :

प्रयोजनमूलक भाषा की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं –

1. वैज्ञानिकता :

प्रयोजनमूलक शब्द पारिभाषिक होते हैं। किसी वस्तु के कार्य-कारण संबंध के आधार पर उनका नामकरण होता है, जो शब्द से ही प्रतिध्वनित होता है। ये शब्द वैज्ञानिक तत्वों की भांति सार्वभौमिक होते हैं। हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली इस दृष्टि से महत्वपूर्ण

हैं।

2. अनुप्रयुक्तता :

उपसर्गो, प्रत्ययों और सामासिक शब्दों की बहुलता के कारण हिन्दी की प्रयोजनमूलक शब्दावली स्वतः अर्थ स्पष्ट करने में समर्थ है। इसलिए हिन्दी की शब्दावली का अनुप्रयोग सहज है।

3. वाच्यार्थ प्रधानता :

हिन्दी के पर्याय शब्दों की संख्या अधिक है। अतः ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों में उसके अर्थ को स्पष्ट करने वाले भिन्न पर्याय चुनकर नए शब्दों का निर्माण संभव है। इससे वाचिक शब्द ठीक वही अर्थ प्रस्तुत कर देता है। अतः हिन्दी का वाच्यार्थ भ्रांति नहीं उत्पन्न करता।

4. सरलता और स्पष्टता :

हिन्दी की प्रयोजनमूलक शब्दावली सरल और एकार्थक है , जो प्रयोजनमूलक भाषा का मुख्य गुण है। प्रयोजनमूलक भाषा में अनेकार्थकता दोष है। हिन्दी शब्दावली इस दोष से मुक्त है।

इस तरह प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी एक समर्थ भाषा है। स्वतंत्रता के पश्चात प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में स्वीकृत होने के बाद हिन्दी में न केवल तकनीकी शब्दावली का विकास हुआ है , वरन विभिन्न भाषाओं के शब्दों को अपनी प्रकृति के अनुरुप ढाल लिया है। आज प्रयोजनमूलक क्षेत्र में नवीनतम उपलब्धि इंटरनेट तक की शब्दावली हिन्दी में उलब्ध है, और निरंतर नए प्रयोग हो रह हैं।

डॉ सत्यनारायण का वर्गीकरण मोटूरी .:

दक्षिण भारत के हिंदी विद्वान डॉ भेद मोटूरी सत्यनारायण ने प्रयोजनमूलक हिंदी के छ . मने है –

सामान्य सम्प्रेषण माध्यम

सामाजिक

व्यावसायिक

कार्यालयी

तकनीकी

सामान्य साहित्य

डॉ: ब्रजेश्वर वर्मा का वर्गीकरण .

डॉब्रजेश्वर वर्मा ने प्रयोजनमूलक हिंदी के मुख्य दो भेद किए हैं .

कोर हिंदी (Core Hindi)

एडवांस हिंदी (Advance Hindi)

कोर हिंदी के चार उपभेद है–

कार्यालयी हिंदी कार्यालय प्रशासन के लिए प्रयुक्त
(Official Hindi for Office administration)
व्यावसायिक हिंदी वाणिज्य गतिविधियों के लिए
(Commercial Hindi for Commercial Administration)
तकनीकी तथा बिधि व्यवसाय में प्रयुक्त
(Technical Hindi for Technical Variations including Legal profession)

renaissance renaissance renaissance

bdkbl & 2
ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh

fofHkUu /ofu;k d ey l cu lkFkd o.k&lenk; dk 'kCn dgr gA Hkk"kk e çk;% lkFkd 'kCnk dk gh ç;kx fd;k tkrk gA

'kCnk dk oxhZdj.k
L=kr] jpuk] vFk vkj ç;kx d vk/kkj ij 'kCnk dk db çdkj l oxhdj.k fd;k tk ldrk gA lkr d vk/kkj ij rRle] rnHko] n'kt rFkk fon'kh 'kCnk dh x.kuk dh tkrh gA jpuk d vk/kkj ij 'kCnk d nk Hkn&ey vkj ;kfxd fd, tkr gA blh çdkj l vFk d vk/kkj ij 'kCn d ,dkFkh vkj vudkFkh nk Hkn fd, tkr g blh çdkj l ç;kx fo"k; ;k ç;kx {k= d vk/kkj ij 'kCn dk rhu oxk e foHkkftr fd;k tkrk gA ikfjHkkf"kd] v)ikfjHkkf"kd rFkk lkekU; 'kCnA

ikfjHkkf"kd 'kCn
fdlh oLr dh vo/kkj.kk ;k fopkj dk ;FkkFk Kku çklr djku okyk uik&ryk dFku ifjHkk"kk dgykrk gA ,l dFku dk vfrO;kflr] vO;kflr vkj vlxfr tl nk"kk l eDr gkuk pkfg,A lkFk gh lf{klr rFkk lLi"V Hkh gkuk pkfg,A ifjHkkf"kd 'kCn dk lkekU; ;k vke 'kCn l vrj Li"V dju vkj bldh O;k[;k d fy, Hkh ifjHkk"kk nuk vko';d gA ifjHkkf"kd 'kCn dk lkekU; ifjHkk"kk bl çdkj gk ldrh g& ^^ekuo lc/kh fdlh fo'k"k fØ;k&dyki ;k çÑfr dh fo'k"k ?kVuk vFkok fdlh fØ;k&fopkj ;k ldYiuk l संबंद्ध वह शब्द या शब्दावली, जिसका विषय विशेष के अध्येता या विद्वान के लिए खास महत्त्व होता है।''
fdlh xFk d v/;;u vkj y[ku e gekj lkeu db çdkj d 'kCn vkr gA tc ge fdlh xFk dk ,d Hkk"kk l nljh Hkk"kk e vuokn djr g rk vud 'kCn ,l gkr g] ftud cny ge nljh Hkk'kk d ,d vf/kd i;k;k e l bPNkulkj fdlh ,d dk pudj ç;kx dj ldr gA ; fo'k"k çÑfr oky 'kCn gkr gA dHkh&dHkh gk ldrk g fd ftl Hkk"kk e vuokn fd;k tk jgk g] mle ,l 'kCnk d mi;Dr i;k; dk gh ç;kx fd;k tk ldrk g] ftldk fof'k"V vkj lfopkfjr vfHkçk; gkrk gA ,l gh fof'k"V 'kCnk dk ikfjHkkf"kd 'kCn dgk tkrk gA

ikfjHkkf"kd 'kCnk dh fo'k"krk,¡
ikfjHkkf"kd 'kCn dk rduhdh 'kCn Hkh dgr gA rduhdh 'kCn vxth d VfDudy 'kCn dk fgnh :ikrj gA ;|fi VfDudy 'kCn dk lc/k ;k rk VfDudy vkj VDukykth l g] fdUr rduhdh 'kCn dk ç;kx ikfjHkkf"kd 'kCn d vFk e Hkh gkrk g] ftld vrxr ç'kklu] ekufodh] foKku rFkk okf.kT; vkfn d 'kCnk dh viuh fo'k"krk,¡ gkrh g] tk mUg vU; çdkj d 'kCnk l vyx djrh g&

1. ikfjHkkf"kd 'kCn dk vFk Li"V vkj lfuf'pr gkrk g rFkk ,d fo"k; ;k fl)kr e mldk ,d gh vFk gkrk gA
2. ,d fo"k; e ,d /kkj.kk ;k oLr d fy, ,d gh ikfjHkkf"kd 'kCn gkrk gA
3. ikfjHkkf"kd 'kCn ey ;k :< gkuk pkfg, rkfd fdlh çdkj d lng gA
4. ikfjHkkf"kd 'kCn NkVk gkuk pkfg, rkfd ç;kx e lfo/kk gkA
5. ikfjHkkf"kd 'kCn ,lk gk]ftll mld vFk lc) Nk;kvk dk çdV dju oky 'kCn cuk, tk ldA

ikfjHkf"kd 'kCnk d çdkj
ç;kx dh nf"V l ikfjHkkf"kd 'kCnk dk nk oxk ee ckVk tk ldrk g& vi.k ifjHkkf"kd rFkk i.k ikfjHkkf"kdA

vi.k ikfjHkkf"kd& ; o 'kCn gkr g tk fo"k; fo'k"k l lc) çkfDr e fo'k"k vFk nr gA vr% ikfjHkkf"kd Lo:i dk fuog djr g] yfdu tc ml fo'k"k fo"k; {k= l ckgj mudk ç;kx gkrk g] rk mud ikfjHkkf"kd 'kCnk dk vi.k ikfjHkkf"kd] v) ikfjHkkf"kd vFkok vkf'kd ifjHkkf"kd 'kCn dgk tkrk g] tl vlxfr] 'kfDr] v{kj] j[kk] /ofu vkfnA

i.k ikfjHkkf"kd& i.k ikfjHkkf"kd o 'kCn g] ftudk ikfjHkkf"kd 'kCn d :i e gh ç;kx gkrk gA ,l 'kCnk dk ç;kx lkekU; ;k vke vFk d fy, ugh gkrk gA viu fof'k"V vFk d dkj.k gh ,l 'kCn i.k ikfjHkkf"kd 'kCn dgykr g% tl v}r] n'key;] çdVh] ;ofudh vkfnA

ç'kklfud ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh

Adhoc	:	rnFk	Article	:	vuPNn
Assembly	:	lHkk	Allowances	:	भत्ता
Administrator	:	ç'kkld	Autonomy	:	Lok;ork
Act	:	vf/kfu;e	Acting	:	dk;dkjh
Bill	:	fo/k;d	Constitution	:	lfo/kku
Discipline	:	vu'kklu	Election	:	puko
Ex-officia	:	inu	Emergency	:	vkikr
Endorse	:	vdu&i"Bkdu	Inquiry	:	tkp
Invalid	:	vekU;	Registrar	:	dylfpo
Dean	:	vf/k"Bkrk	Vice&chancellor	:	dyifr

ekufodh ifjHkkf"kd 'kCnkoyh%

Aesthetics	:	lkUn;'kkL=	Anthropologist	:	ekuofoKkuh
Behaviorism	:	0;ogkjokn	Content	:	fo"k;oLr
Citizenship	:	ukxfjdrk	Concept	:	/kkj.kk
Creation	:	ltu			
Cultural Heritage	:	çkÑfrd fojklr			
Environment	:	ikjo'k	Emotion	:	lox
Frustration	:	dBk	Human	:	ekuo
Indology	:	çk0;fo|k	Litcracy	:	lk{kjrk
Population	:	tul[;k	Personification	:	ekuohdj.k
Right	:	vf/kdkj	Reservation	:	vkj{k.k
Sensitivity	:	lonu'khyrk			

0kkf.kT; lc/kh 'kCnkoyh

Accountant	:	y[kkikly	Audit	:	x.kukijh{kk
Agent	:	vfHkdrk	Capital	:	ith
Cashier	:	jkdfM;k	Currency	:	_.knkrk
Debtor	:	_.kh	Income	:	vk;

renaissance renaissance renaissance

Investment	:	fuo'k	Leadger	:	[kkrk
Manager	:	çc/kd	Guarantee	:	çR;kHkfr
Net Loss	:	'k) ?kkVk	Production	:	mRiknu
Profit	:	ykHk	Recurring	:	vkorh tek
Pledge	:	fxjoh	Tax	:	dj
Tender	:	fufonk	Trade	:	O;kikj

oKkfud ,oa rduhdh 'kCnkoyh%

Acidity	:	vEyrk	Anesthesia	:	lonukgj.k
Pollution	:	çn"k.k	Antibiotic	:	çfrtfod
Bio-Energy	:	toÅtk			
Bio-Technology	:	to rduhdh	Cell	:	dkf'kdk
Tissue	:	Ård	Satellite	:	mixg
Radiation	:	fofdj.k	Parasite	:	ijthoh
Microwave	:	l{erjx	Gravitation	:	x:Rokd"k.k
Genetics	:	vuokf'kdh	Diagnosis	:	jkxfunku
Ecology	:	ifjfLFkfrdh	Fossil	:	thok'e
Fertility	:	çtuu{kerk] mojrk	Parasite	:	ijthoh

ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh % vxzth ls fgnh%

Honorarium	:	ekun;
Bureaucracy	:	ukdj'kkgh
Act	:	vf/kfu;e
Advocate General	:	egkf/koDrk
Domicile	:	vf/kokl
Broadcasting	:	çlkj.k
Constitution	:	lfo/kku
Executive	:	dk;ikfydk
Evidence	:	lk{;
Gazette	:	lpuk&i=
Memorandum	:	Kkiu
Majority	:	cger
Suspend	:	fuyEcu
Tribe	:	tutkfr
Will	:	olh;r
Honesty	:	bekunkjh

bdkbZ&4
fgUnh lkfgR; dk lf{kIr bfrgkl

dkyde l miyC/k lk{;k d vk/kkj ij fgUnh lkfgR; dk Jhx.k'k ईसा की दसवीं शताब्दी से हुआ मिलता है। इसमें यदि हिन्दी भाषा के प्रारम्भिक रूप अपभ्रं”k dk Hkh tkM y rk ;g dky NVh lkroh शताब्दी तक जा पहुँचता है। इतना पुjkru vkj fujUrj fodkl”khy jgu okyk Hkh fgUnh lkfgR; xr डेढ सहस्र वर्षों में समय के साथ बढता ही गया। दूसरी और यह बात भी ऐदम सच है कि प्रारम्भ के लगभग एक हजार वषों तक हिन्दी में साहित्य का इतिहास जैसी चीज का एक दम अभाव रहा है।

1- ikjfEHkd i;kl & fgUnh lkfgR; d bfrgkl y[ku dk ikjEHk dju dk J; g & ifl) Qp fo}ku ikQlj xkl kn rklh dk ftUgku lu 1939 b- e bLrkoj nyyrjRFkj ,nb , fgUnLrkuh dh jpuk dhA bldk loiFke idkf'kr fd;k Fkk & xV fcVu vkj vk;jyM dh vkfj;Vy VkLy'ku deVh uA Ýp Hाषा में रचित इसके प्रथम संस्करण के दो भाग थे और f}rh; d rhu HkkxA lu 1938 e fnYyh d ekyok djhennhu u bldk roQkue'kvl d uke l ifjofrr ifjof/kr djd] idkf'kr djk;kA mn e bl rtkfdjk ¼ftØ½ dgk x;k rk vxth e fgLVhA
fQj Hkh bl iFke i;kl dk ekx in'kd vo';d ekuk tk;xkA

2- J"B i;kl & जनवरी सन् 1029 में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य का इतिहास idkf”kr gvkA okLro e fgUnh e fy[k xUFk dk lPp vkj i.k vFkk e lkfgR; dk bfrgkl dgk tk ldrk gA og ;g xUFk gA bl xUFk e lcl igyh ckj vkfndky l ydj Nk;koknh jgL;oknh ;x rd dg fofHkUu L=krk l ikIr lkexh lfu;kftr ,o lfopkfjr dky foHkktu d vk/kkj ij vkj lkfgfR;d <x l miflFkr dh xb feyrh gA ;g bfrgkl lkfgR; dh परिभाषा के साथ आरम्भ होता है –जबकि प्रत्येक दे'k dk lkfgR; ogk dh turk dh fprofRr dk lfp= ifrfcEc gkrk g rc ;g fuf”pr g fd turk dh fpRrofRr d ifjoru d lkFk lkfgR; d Lo:Ik e Hkh ifjoru gkrk pyk tkrk gA vkfn l vUr rd bUgh fprofRr;k dh ijEijk dk ij[kr g, lkfgr; ijEijk d lkFk mldk lkeatL; fn[kkuk gh साहित्य का इतिहास कहलाता है। इस परिभाषा से ही इस बात का संकेत मिल जाता है कि mud bfrgkl e dky Øe d vk/kkj ij dfooRr lxg oju rRdkyhu lkekftd ifjik”o e dfo;k d dfoRo lkj vkj dfrRo d lkFk gh dfo;k d drRo ij Hkh fopkj fd;k x;k gA

fu%lng viuh bUgh fo'ाषताओं के कारण यह इतिहाय अधिकाधिक अर्थों में साहित्य का इतिहास irhr gkrk gA iek.k viuh nk iofRr;k d dkj.k lkfgR; dk mudk bfrgkl vf/kdkf/kd vFkk e lkfgR; dk bfrgkl irhr gkrk gA ;g dguk Hkh vikIfxd ugh dh de l de fgUnh d fy, bl idkj dk i;Ru viu e ;g xUFk vkn'k :Ik e xg.k fd;k tkrk g dky विभाजन की कसौटी पर विचार करते समय भी आचार्य शुक्ल ने दो तथ्यों पर वि'ाष बल दिया है।

1- ftl dky[k.M d Hkhrj fdlh fo'ाष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता दिखाई पडे ml ,d vyx dky ekuk tk ldrk g vkj mldk ukedj.k mUgh jpukvk d Lo:Ik d vuLkj fd;k tk ldrk gA

renaissance

2- fdlh dky d Hkhrj ftl ,d gh <x d cgr vf/kd xUFk ifl) py vkr g ml <x dh jpuk ml dky d y{k.k d vUrxr ekuh tk;xh vFkkr iflf) Hkh fdlh dky dh ykdiofRRk dh ifr/ofu हुआ करती है। यही कारण कि यद्यपि आचार्य शुक्ल ने (डॉ- ukeojflg d ''kCnk e dfo;k d uke l igy de l[;k nu dk <x Hkh ogh feJc/k foukn okyk iphu <x½ jgu fn;k] ijUr iofRr lkE; vkj ;x d vulkj dfo;k dk lenk;k e j[kdj mUgku lkefgd v''kk e Lor% gh ;fDr lxr irhr gku yxrk gA

3- vU; i:;kl & शुक्लजी के प''pkr vf/kdk''kr% mUgh d vudj.k ij] fgUnh lkfgR; d vud bfrgkl xUFk jp x;A ie[k xUFk vkj xUFkdkj g &

1- हिन्दी भाषा और साहित्य श्यामसुन्दर दास – संवत 1987 में इलाहबाद d idkf''kr yxHkx 500 पृष्ठों के ग्रन्थ में साहित्य की विशिष्ट धाराओं का विस्तृत निरूपण किया गया है।

2- fgUnh lkfgR; dk foopkukRed bfrgkl & Mk- सूर्यकान्त शास्त्री प्रका''ा वर्ष संवत 1987। ie[k fo''ाषता – कवियों का तुलनात्मक अध्ययन।

3- हिन्दी भाषा और उसके सािgR; dk fodkl & gfjvk/kA eyr% iVuk fo''ofo|ky; e fn;k गया विस्तृत भाषण बाद में पुस्तककार में प्रकाि''krA

4- fgUnh lkfgR; dk bfrgkl & Mk- jek''ांकर शुक्ल रसाल। संवत 1988 में प्रकाि''kr fgUnh d lHkh bfrgkl xUFkk e cMkA

5- lkfgR; dh >kdh & ik- lR;UnA lor 1993 e idkf''ात निबन्धात्मक शैली।

6- fgUnh lkfgR; dk vkykpukRed bfrgkl & Mk- jktdekj oekA igy nk dkyk rd lhferA

7- fgUnh lkfgR; & mnHko vkj fodkl] fgUnh lkfgR; dh Hkfedk rFkk fgUnh lkfgR; dk vkfndky g tkjh f}onhA

8- fgUnh lkfgR; dk oKkfud bfrgkl & Mk- x.kifr pUn xlr

9- fgUnh lkfgR; dk foopukRed bfrgkl & Mk- noh''kj.k jLrkxhA

10- fgUnh lkfgR; dk foopukRed bfrgkl & ¼l½ Mk- uxUnA

dky[k.M &

आदिकाल – संवत 1050 से 1375 तक

भक्तिकाल – संवत 1375 से 1700 तक

रीतिकाल – संवत 1700 से 1900 तक

आधुनिक काल – संवत 1900 से अब तक

fgUnh dh ie[k iLrd ,o y[kd &

1- cfde pUn pVkik/;k; & vkuneB
2- dkfVY; & vFk'kkL=A
3- foHkfr Hk"k.k oek & ikFkj ikpkyh
4- tokgjyky ug: & fMLdojh vkQ bfM;k
5- t;'kdj ilkn & dkek;uh

renaissance renaissance

6- e'kh iepn & xknku] xcu] jxHkfe
7- egknoh oek & ;kek] fugkfjdk
8- HkkjrUn gfj'kpUn & v/kj uxjh
9- /keohj Hkkjrh & xukgk dk nork
10- gfjo'kjk; cPpu & e/k'kkyk
11- Q.kh'ojukFk j.k & eyk vkpy
12- Jhyky 'kDy & jkx njckjh
13- Hkh"e lkguh & rel

fgUnh dk iec[k lEeku & ijLdkj &
1- Hkkjrh; KkuihB ijLdkj &

ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है। भारत का कोई भी नागरिक जो आठवीं अनुसूची में बताई गई २२ भाषाओं में से किसी भाषा में लिखता हो इस पुरस्कार के योग्य है। पुरस्कार में ग्यारह लाख रुपये की धनराशि , प्रशस्तिपत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा दी जाती है।

2- efrZ noh lEeku &

मूर्तिदेवी पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ समिति के द्वारा दिया जानेवाला प्रतिष्ठित साहित्य सम्मान है। पुरस्कार में दो लाख रूपए, प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और वाग्देवी की प्रतिमा दी जाती है।

3- lkfgR; vdkneh lEeku &

साहित्य अकादमी पुरस्कार, सन् १९५४ से प्रत्येक वर्ष भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ कृतियों को दिया जाता है, जिसमें एक ताम्रपत्र के साथ नक़द राशि दी जाती है। नक़द राशि इस समय एक लाख रुपए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पुरस्कार , बाल साहित्य पुरस्कार एवं युवा लेखन पुरस्कार भी प्रतिवर्ष विभिन्न भारतीय भाषाओं में दिए जाते हैं , इन तीनों पुरस्कारों के अंतर्गत सम्मान राशि पचास हज़ार नियत है।

4- ljLorh lEeku &

सरस्वती **सम्मान** के. के. बिड़ला फ़ाउंडेशन द्वारा दिया जाने वाला साहित्य पुरस्कार है। यह सम्मान प्रतिवर्ष संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्ज भाषाओं की में प्रकाशित उत्कृष्ट साहित्यिक कृति को दिया जाता है। यह कृति सम्मान वर्ष से पहले दस वर्ष की अवधि में प्रकाशित होने वाली कोई पुस्तक ही हो सकती है। इस सम्मान में शाल , प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और पांच लाख रुपये की सम्मान राशि दी जाती है। सरस्वती सम्मान का आरंभ १९९१ में किया गया था।

renaissance

5- 'kykdk lEeku &

शलाका सम्मान हिंदी अकादमी को ओर से दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है। हिन्दी जगत में सशक्त हस्ताक्षर के रूप में विख्यात तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में समर्पित भाव से काम करने वाले मनीषी विद्वानों, हिन्दी के विकास तथा संवर्धन में सतत संलग्न कलम के धनी , मानव मन के चितरों तथा मूर्धन्य साहित्यकारों के प्रति अपने आदर और सम्मान की भावना को व्यक्त करने के लिए हिन्दी अकादमी प्रतिवर्ष एक श्रेष्ठतम साहित्यकार को शलाका सम्मान से सम्मानित करती है। सम्मान स्वरूप, १,११,१११/-रुपये की धनराशि, प्रशस्ति-पत्र एवं प्रतीक चिह्न आदि प्रदान किये जाते हैं।

6- 0;kl lEeku &

व्यास सम्मान भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद दूसरा सबसे बड़ा साहित्य-सम्मान है। इस पुरस्कार को १९९१ में के के बिड़ला फाउंडेशन ने प्रारंभ किया था। इस पुरस्कार में ३ लाख रुपए नकद प्रदान किए जाते हैं। १० वर्षों के भीतर प्रकाशित हिन्दी की कोई भी साहित्यिक कृति इस पुरस्कार की पात्र हो सकती है। अज्ञेय , कुंवर नारायण तथा केदार नाथ सिंह को भी इस पुरस्कार से अलंकृत किया जा चुका है।

7- x.ks'k 'kadj fo|kFkhZ iqjLdkj &

'गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार' पुरस्कार हिंदी पत्रकारिता और रचनात्मक साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य तथा विशिष्ट योगदान करने वालों को मिलता है। गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार को प्राप्त करने वाले विद्वानों को भारत के राष्ट्रपति द्वारा स्वयं यह सम्मान प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार को पाने वाले विद्वानों को पुरस्कार के अंतर्गत एक-एक लाख रुपये, एक शॉल और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष दो लोगों को प्रदान किया जाता है। इस 'हिंदी सेवी सम्मान योजना' का प्रारम्भ 1989 में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के द्वारा किया गया था।

8- 'kjn tks'kh lEeku &

शरद जोशी सम्मान ,उत्कृष्ट सृजन को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित करने की अपनी सुप्रतिष्ठित परम्परा का अनुसरण करते हुए मध्यप्रदेश शासन ने हिन्दी व्यंग्य , ललित निबन्ध, संस्मरण, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र इत्यादि विधाओं में रचनात्मक लेखन के लिए स्थापित किया है। यह गौरव की बात है कि शरद जोशीमध्यप्रदेश के निवासी थे, जिन्हें उनकी सशक्त और विपुल व्यंग्य रचनाओं ने साहित्य के राष्ट्रीय परिदृश्य पर प्रतिष्ठित किया। शरद जोशी ने व्यंग्य को नया तेवर और वैविध्य दिया तथा समय की विसंगति और विडम्बना को अपनी प्रखर लेखनी से उजागर करते हुए समाज को दृष्टि और दिशा प्रदान करने का उत्तारदायी रचनाकर्म किया। उनकी व्यंग्य रचनाओं ने हिन्दी साहित्य की समृद्धि में अपना सुनिश्चित योगदान दिया है।

renaissance renaissance renaissance

9- eSfFkyh'kj.k xqIr &

मैथिलीशरण गुप्त सम्मान मध्यप्रदेश शासन ने साहित्य और कलाओं को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से अनेक राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय सम्मानों की स्थापना की है। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में वार्षिक सम्मान का नाम खड़ी बोली के शीर्ष प्रवर्तक कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की स्मृति में रखा गया है। राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान का उद्देश्य हिन्दी साहित्य में श्रेष्ठ उपलब्धि और सृजनात्मकता को सम्मानित करना है। सम्मान का निकष असाधारण उपलब्धि, रचनात्मकता, उत्कृष्टता और दीर्घ साहित्य साधना के निरपवाद सर्वोच्च मानदण्ड रखे गये हैं।

renaissance renaissance renaissance

bdkb&5
fgUnh d fodkl e ;kxnku nu okyh ie[k lLFkk,

नागरी लिपि परिषद्, नई दिल्ली
राजभाषा संघर्ष समिति, दिल्ली
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा (महाराष्ट्र)
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली
केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवन्तपुरम
मणिपुर हिन्दी परिषद्, इम्फाल
अंग्रेजी अनिवार्यता विरोधी समिति, नकोदर (पंजाब)
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
राष्ट्रीय हिन्दी परिषद्, मेरठ
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चैन्नई
अखिल भारतीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद (.प्र.उ)
साहित्य मंडल, नाथद्वारा(राजस्थान)
मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल (.प्र.म)
कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बेंगलूर (कर्नाटक)
मुंबई हिन्दी विद्यापीठ, मुंबई(महाराष्ट्र)
मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्, बेगलौर
अखिल भारतीय भाषासम्मेलन-साहित्य-, पटना
राष्ट्रीय हिन्दीसेवी महासंघ, इन्दौर (.प्र.म)
भारतएशियाई साहित्य अकादमी-, दिल्ली
हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली
भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन राष्ट्रीय परिषद्, मुम्बई (महाराष्ट्र)

renaissance renaissance renaissance